[Social Issues and Environmental Problems,Vol.3 (Iss.9:SE): Sep, 2015] ISSN- 2350-0530(O) ISSN- 2394-3629(P)
Impact Factor: 2.035 (I2OR)
DOI: https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v3.i9SE.2015.3223

INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCH – GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository

# सामाजिक वानिकी एवं पर्यावरण संरक्षण

**देवेन्द्रसिंह ठाकुर**
सहायक प्राध्यापक (हिंदी), शासकीय महाविद्यालय धरमपुरी, जिला– धार

**सारांश**
पर्यावरण अर्थात हमारे चारो ओर का वातावरण जो प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से हमारी जीवनशैली को प्रभावित करता है। सैद्धांतिक एवं व्यावहारिक रूप में वनो की संरचना प्रबंध तथा उनके उत्पादो का उचित उपयोग वानिकी कहलाता है। कार्यदृष्टि के क्षेत्र अनुसार वानिकी के अनेक प्रकार है जैसे कृषि वानिकी, उद्यान वानिकी, ग्रामीण वानिकी, नगरीय वानिकी , सामाजिक वानिकी। सामाजिक सेवा के उद्देश्य से किया गया वनीकरण सामाजिक वानिकी कहलाता है। सामाजिक वानिकी समाज की मुलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति करने के साथ साथ पर्यावरण संतुलन को बनाये रखने का महत्वपूर्ण कार्य करती है। सामाजिक वानिकी ने मानवजीवन और पर्यावरण को प्रभावित किया है। मेरे शोध पत्र में सामाजिक वानिकी का अर्थ, आवश्यकता, उसके उद्देश्यो, कार्यो और उसकी उपयोगिता पर प्रकाश डाला गया है तथा सामाजिक वानिकी ने मानव जन जीवन को कितना प्रभावित किया है, को बताया गया है। वर्तमान समय में हमें सामाजिक वानिकी की कितनी आवश्यकता है को महत्व को प्रतिपादित करने का प्रयास किया गया है। इस शोध कार्य के जरिए लोग सामाजिक वानिकी की आवश्यकता और महत्व को भलिभांति समझ सकेगे।

**शब्दकुंजी** : सामाजिक, वानिकी, पर्यावरण, वृक्षारोपण, विकास

## प्रस्तावना
पर्यावरण अर्थात हमारे चारो ओर का वातावरण जो प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से हमारी जीवनशैली को प्रभावित करता है। वर्तमान समय में मानव की भौतिकवादी प्रवृत्ति पर्यावरण को अत्यधिक नुकसान पहुंचा रही हैं। इसके कारण कई प्रकार के हानिकारक परिवर्तन देखने को मिल रहे है जो आगे चलकर ओर अधिक घातक सिद्ध होगें तथा इसके कारण आगे आने वाली पीढ़ी को कई प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ेगा। सैद्धांतिक एवं व्यावहारिक रूप में वनो की संरचना प्रबंध तथा उनके उत्पादो का उचित उपयोग वानिकी कहलाता है। सामाजिक सेवा के उद्देश्य से किया गया वनीकरण सामाजिक वानिकी कहलाता है। सामाजिक वानिकी शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग राष्ट्रीय कृषि आयोग ने 1976 में ईंधन, चराई, वन उत्पादों और लकड़ी के लिए किया था। सामाजिक वानिकी के कार्यक्रमों के द्वारा समाज को वनो का महत्व बताते हुए अधिक से अधिक वृक्षारोपण के लिए प्रेरित करना था ताकि समाज की मुलभूत आवश्यकताओं को पूरा करते हुए पर्यावरण को भी प्रदुषण से मुक्त रखा जा सके। सामाजिक वानिकी समाज की मुलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति करने के साथ साथ पर्यावरण संतुलन को बनाये रखने का महत्वपूर्ण कार्य करती है। मेरे शोध पत्र में सामाजिक वानिकी की आवश्यकता, उसके उददेश्यो, कार्यो और उसकी उपयोगिता पर प्रकाश डाला गया है। सामाजिक वानिकी के द्वारा ही पर्यावरण के संतुलन को बनाये रखा जा सकता है को बताने का प्रयास किया गया है। वरना हम सब को कई प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड सकता है। इस शोध कार्य के जरिए लोग सामाजिक वानिकी की आवश्यकता और महत्व को भलिभांति समझ सकेगे। इसलिए मैने सामाजिक वानिकी को अपने शोध का विषय बनाया है।

## शोध प्रविधि

किसी भी शोध कार्य को पूर्ण करने के लिए तथ्यों और सामग्री का होना अतिआवश्यक है। विद्वानों द्वारा तथ्यों और सामग्री के संकलन हेतु अनेक विधियाँ बतायी है, जैसे साक्षात्कार, प्रश्नावली, सर्वेक्षण और आसन कार्य विधि आदि। सामग्री संकलन के लिए मैं इस क्षेत्र के जानकारों तथा समाज के सभी वर्गो के लोगो से प्रत्यक्ष मिलकर उनका साक्षात्कार लूगां तथा विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं से भी तथ्यों का संकलन करूगां। हम सब जानते है शोध प्रविधि का चयन विषयानुसार किया जाता है इसलिए मैंने इस शोध कार्य हेतु साक्षात्कार, सर्वेक्षण विधि का चयन किया है जो मेरे शोध कार्य के लिए उपयुक्त सिद्ध होगीं।

## शोध के उद्देश्य

प्रस्तुत शोध कार्य का उद्देश्य मुख्य रूप से सामाजिक वानिकी का समग्र अध्ययन करना है। सामाजिक वानिकी का सैद्धांतिक विवेचन कर उसके अर्थ और स्वरूप पर प्रकाश डालना है। उसकी विकास प्रक्रिया को समझाना है। इस शोध के माध्यम से सामाजिक वानिकी के विविध पक्षों का अध्ययन, चिंतन, मनन करके उसमें निहित तत्वों को खोजना भी है। सामाजिक वानिकी के महत्व को प्रतिपादित करना हैं क्योंकि ये प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष रूप से हमारे जीवन का अभिन्न अंग है जिसके बिना हमारा सर्वांगीण विकास असंभव है साथ ही साथ वानिकी के प्रमुख कार्यो का अध्ययन करना भी है।

## उपकल्पना

शोधार्थी और पाठक सामाजिक वानिकी के कार्यो को, उसकी आवश्यकता को और उसके महत्व के साथ साथ उसके विविध आयामों को जान सकेगें तथा सामाजिक वानिकी के क्षेत्र में अपनी भूमिका को सुनिश्चित कर सकेगें।

## सामाजिक वानिकी की आवश्यकता

आज के वैज्ञानिक युग में मानव ने विकास की अंधी दौड़ में पर्यावरण को इतनी अधिक क्षति पहुंचाईं है कि उसकी भरपाई करना मुश्किल ही नहीं नामुमकिन है। यदि हम जब जागे, तब सवेरा कहावत पर अमल करते हुए यदि हम आज भी संभल जाते है तो ये हम सब के लिए लाभदायक साबित होगा। क्योंकि आज हमारे चारों ओर अनेक पर्यावरणीय समस्याएं मुहं बायें खड़ी है, जिनमे से कुछ निम्नलिखित है– भूमिक्षरण को रोकने के लिए, ईंधन के लिए, पशु चारे के लिए, बंजर भूमि को उपयोगी बनाने के लिए, पर्यावरण संरक्षण के लिए, बाढ़ और सूखे की समस्या से निजात पाने के लिए, उद्योगों को कच्चा माल उपलबध कराने के लिए, मुलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए, ध्वनि प्रदुषण पर नियंत्रण के लिए, वर्षा की मात्रा में वृद्धि के लिए, आमोद प्रमोद के स्थलों में वृद्धि के लिए, ग्रामीणों आत्मनिर्भर बनाने के लिए, राष्ट्रीय वनों पर दबाव कम करने के लिए वायु के तेज तूफानो से बचाव के लिए, वायु प्रदुषण की रोकथाम के लिए, पक्षियों को प्राकृतिक आवास उपलब्ध कराने के लिए, आंर्द्रता के संरक्षण के लिए, स्वरोजगार विकसित करने के लिए, पर्यटक स्थल बनाने के लिए, खाद्य श्रृंखला के लिए आदि। उक्त कार्यो को सामाजिक वानिकी के द्वारा सफलतापूर्वक कियान्वित किया जा सकता है और अपेक्षित परिणाम प्राप्त किया जा सकता है।

## सामाजिक वानिकी के कार्य

शोध करने पर पाया कि सामाजिक वानिकी के अंतर्गत हम निम्नलिखित कार्य कर सकते है जो निःसंदेह हम सब के लिए महत्वपूर्ण साबित होगें – खेतो में वायु अवरोधक लगाना, सुरक्षा पट्टी तैयार करना, सड़कों और रेललाइन के दोनों ओर वृक्षावली लगाना, वृह्द पैमाने पर वृक्षारोपण के कार्यक्रमों का आयोजन करवाना, बंजर भूमि पर वृक्षारोपण करवाना, भूमिक्षरण वाले क्षेत्रों में पौधे लगवाना, तालाब, नदी और झरनों के आसपास पौधे लगवाना, नहरो के दोनो ओर पौधे लगवाना, गांवो और नगरो के सार्वजनिक स्थलों पर पौधे लगवाना, धार्मिक स्थलों पर पौधे लगवाना, राजमार्गो पर यात्रियो के विश्राम के लिए पौधे लगाना, विद्यालयों और महाविद्यालयों वृक्षारोपण के कार्यक्रम का आयोजन करना, वर्षा ऋतु में हरियाली महोत्सव मनाना तथा इन कार्यक्रमों में आम जनता की अधिक से अधिक भागीदारी को सुनिश्चित करना ताकि सामाजिक वानिकी का कार्य सफल हो

सके। जिससे हमारे साथ साथ हमारी पीढ़ी का भविष्य भी उज्जवल बन सके। वैज्ञानिको के द्वारा पर्यावरण को प्रदुषण से मुक्त करने के अनेक उपाय बताये जाते है परन्तू उन उपायो पर अमल नहीं किया जाता है जिसके कारण दिन प्रतिदिन पर्यावरण असंतुलित होता जा रहा है। सामाजिक वानिकी एक महत्वपूर्ण उपाय है जिससे हम पर्यावरण का संतुलन बनाये रखते हुए अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति भी कर सकते है।

## सामाजिक वानिकी का महत्व

सामाजिक वानिकी के योगदान को हम अपने आसपास के पर्यावरण को देख कर लगा सकते है। इसकी उपयोगिता से इसके महत्व का आकलन किया जा सकता है, जो निम्नानुसार है – पर्यावरण में सुधार होगा, भूमिक्षरण पर रोक लगेगी, वायु के तेज तूफानो से बचाव होगा, वायु प्रदुषण पर नियंत्रण होगा, उद्योगों को कम कीमत कच्चा माल पर उपलब्ध होगा, पक्षियों को आवास एवं आश्रय प्राप्त होगा, बंजर भूमि हरी भरी होगी, आंर्द्रता का संरक्षण होगा, रोजगार की संभावनाएं बढ़ेगी, बाढ़ और सूखे में कमी आयेगी, मुलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति होगी, ध्वनि प्रदुषण पर नियंत्रण होगा, वर्षा की मात्रा में वृद्धि होगी, आमोद प्रमोद के स्थलों में वृद्धि होगी, ग्रामीण क्षेत्रों में आत्मनिर्भरता आयेगी, राष्ट्रीय वनों पर दबाव कम होगा, प्रदुषण में कमी होगी।

निःसंदेह सामाजिक वानिकी जनोपयोगी एवं सामाजिक क्रांति का कार्यक्रम है जिससे देश का बहुमूखी विकास संभंव है। परन्तु ये तभी फलीभूत होगी जब देश का प्रत्येक नागरिक इसका हिस्सा बने तथा जितना भी वृक्षारोपण किया जा रहा है उसकी कम से कम दो वर्ष तक देखभाल करे। सुरक्षा और सिंचाई की पुरी व्यवस्था करे तभी हमें सामाजिक वानिकी का भरपुर लाभ मिल सकता है। इसके अतिरिक्त विगत वर्षो में पूरे देश में जितना वन क्षेत्र कम हुआ है उसकी भी भरपाई हो जायेगी और पर्यावरण संतुलन भी बना रहेगा। प्रत्येक शोध कार्य का परिणाम तथा उसकी अपनी सार्थकता होती है। इस शोध के द्वारा सामाजिक वानिकी के विविध आयाम, जो अब तक छुपे हुए थे, से सुधी पाठक और शोधार्थी रूबरू होगें।

## निष्कर्ष

मेरा शोध कार्य सामाजिक वानिकी के विविध आयामों का सम्यक विवेचन प्रस्तुत करता है। ये पूर्णतः मौलिक एवं नवीन होकर शोध की दिशा में महत्वपूर्ण साबित होगा। लोग सामाजिक वानिकी के महत्व को जानकर उससे जुड़ने का, उसे समझने का तथा आत्मसात करने का प्रयास करेगें क्योंकि आज के वैज्ञानिक युग में भौतिकवादिता की अंधी दौड़ में प्रत्येक व्यक्ति अपने समाज और पर्यावरण से कोसो दूर होता जा रहा है। ये शोध उन्हे सामाजिक वानिकी और पर्यावरण के प्रति जागरूक करेगा। मेरे इस शोध कार्य से इस क्षेत्र में कार्य करने वाले शोधार्थी भी लाभान्वित होगें।

## *संदर्भ*

*1 शर्मा, अतुल (2012) पर्यावरण और वन संरक्षण : समस्या और समाधान : तक्षशिला प्रकाशन नई दिल्ली*
*2 खुराना, उषा (2012) पर्यावरण शिक्षा : तक्षशिला प्रकाशन नई दिल्ली*
*3 कुमार, अमित (2008) पर्यावरण अध्ययन : कालेज बुक डीपॉट जयपुर*
*4 सिंह, जगदीश (2012) पर्यावरण एवं समाजशास्त्रीय अध्ययन शिक्षा : तक्षशिला प्रकाशन नई दिल्ली*